

विश्वोयग - किमी संज्ञा या सर्वनाम की विश्वोयता लताने वाले शब्द विशेषण कुहलाते हैं, अर्थात् जो विशेषमा अलाने वासे शाब्द होते हैं विशेषम मुहलारे हैं-असे- नीलगगन, काली गाय, सुन्दर अच्या, अमीर भादमी, प्यालु औरत, करमीरी मेष, हो त्रियार अड़का इत्यादि



विशेषण के डारा जिसकी विशेषता बतलाई जाती है. विशेष्य कुहसीत हैं, जिसे- गगन, गाय, बच्या, आपमी, औरए, सेब, एड़का इत्यादि प्रविशेषण- विशेषण की भी विशेषण बताने वाले शब्द प्रविशेषण प्रतिम दें- जैसे अत्येत नीला गगन, वहुत मोटा आदमी प्रविशेषका विशेषका विशेषका विशेषका विशेषका विशेषका विशेषका



### विशेषण है ने भेद लं उद्देश्य विशेष्य । । । विथेय विशेषव (1) उद्देश्य विशेषण - विशेष्य मे प्रापे प्रयुक्त होने वाते विशेषों शे उद्देय/विशेष्य विशेषण कुहते हैं-जिसे- लाल टमारर, हरा धनिया, नीहारिका सुंदर लड़की है।



(ii) विद्यय विशेषण - विशेष्य / मैजा शकों के जाद प्रयुक्त होने वाला विशेषण विधेय विशेषण कु हलाता है-विष्ठ भी दें। यह गाय नाति है। वह पानी श्रीतम है।



#### विशेषण के भेदः पाँच भेद

- उनुग्रावाचक विशेषना
- २ भैरव्यावाचक "
- उ > परिमाणवाचक "
- 4) > सार्वनामिक/मंक्रेलवाचक्र/निरेशवाचकु
- \$ व्यक्तिवाचक "



# 1) गुजवाचक विशेषण - वे विशेषण शब्द जो किसी मुंजा या

सर्वनाम के रूप रेग, आकार, स्वभाव, गुण, दोष, मवस्था, दशा, दिशा इत्यादि का बीध पुराले हैं, मुगवायक विशेषण म्हलाते है- जैसे- सुन्पर लड़का काला कोट, कमजोर बच्मा, आगड़ाष्ट्र औरत, ईमानदार भावमी, मोटा तड़का, गरीख भावमी, पूर्व मकान उत्यादि



श्री ख्यावाचढ़ विशेषण - विशेषण शब्द भी छिमी मंजा।
भवनाम की निश्चित या अनिश्चित संख्या जा बोध कुराते हैं,
संख्यावाचढ़ विशेषण कुरुताते हैं -

भेषे- एक भरका, दो कब्रूगर, भीन गायें, कुछ अडिकमाँ, बहुल वक्तरियाँ, कुछ पुस्ते कुं, ज्यादा पैन्छ इत्यादि



### सैख्यावाचक विशेषण है हो भेद होते हैं-(ं) निश्चित संख्यावाचकु विशेषण (ii) सनिश्चित संख्यावाचकु विशेषण (i) निस्चित संख्यावाचक विशेषण - वे विशेषण शाब्द जो किसी गणनीय मैजा भी निस्थिता माबीध कराते हैं, निस्थित सैन्व्यावाच्छ विशेषण शक्य महमाते है-र्षेसे - एक माम, दो केसे, लीन छड़ियाँ, पार क्रिसियाँ, पाँच कुने इत्यादि



## निरिचत मैख्यावाचमु विशेषण है उपभेदः

```
(1) गणना वाचक - सक, दी, तीन, चार - - --
```

- (1) > क्रमवाचक परता, इसरा, गीमरा - -
- (1) > आयुन्ति वाचक दुगुना, तिगुना, चौगुना - -
- (७) भमुदाय/समूहवाचक दोनों, भीनों, चारी - -
- (४) > प्रत्येक सूचक प्रत्येक सङ्का, प्रत्येक सङ्की, हर गड़ी, हर माह, हर दिन इत्यादि